यज्ञ की महिमा

(यज्ञ से संबंधित १०८ प्रश्नों के उत्तर)

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती

(एम. ए. दर्शनाचार्य)

प्रकाशक

दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट

आर्यवन, रोजड़, गुजरात

प्रश्न-१ यज्ञ किसे कहते है ?

उत्तर : त्यागपूर्वक किया गया प्रत्येक कर्म जिसमें ईश्वर की आज्ञा का पालन होता है तथा जिस कर्म से समस्त संसार का कल्याण होता है उसे यज्ञ कहते हैं ।

प्रश्न-२ यज्ञ कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर : दो प्रकार होता है ।

प्रश्न-३ दोनों प्रकार के यज्ञों के नाम बताओ ?

उत्तर : (१) आत्मयज्ञ और (२) द्रव्ययज्ञ ।

प्रश्न-४ आत्ययज्ञ क्या है ?

उत्तर : जिसमें अपनी आत्मा को परमात्मा के लिए सर्मर्पित किया जाता है अर्थात ईश्वर के प्रति समर्पित होकर एकाग्र चित्त से ईश्वर का ध्यान-जप-चिन्तन करना आत्मयज्ञ है ।

प्रश्न-५ द्रव्य यज्ञ क्या है ।

उत्तर : जिसमें अग्नि में घृत, हवन सामग्री आदि पदार्थों को सर्मर्पित किया जाता है अर्थात् उनकी आहूति दी जाती है वह द्रव्य यज्ञ है ।

प्रश्न-६ द्रव्य यज्ञ को और किन-किन नामों से जाना जाता है ?

उत्तर : द्रव्य यज्ञ को - अग्निहोत्र, हवन, होम, इष्टि, याग, मेघ, मख, वेनः, घर्मः, अध्वर, विदथ, सवनं, विष्णु,

इन्दु, नाराशंस, प्रजापति, देवतातः, अग्निकर्म आदि नाम से जाना जाता है ।

प्रश्न-७ हवन सामग्री में कितने प्रकार के पदार्थ होते है ?

उत्तर : हवन सामग्री में चार प्रकार के पदार्थ होते हैं ।

प्रश्न-८ इनके चारों नाम बताओ ?

उत्तर : (१) सुगंधिकारक पदार्थ, (२) पुष्टिकारक पदार्थ, (३) रोगनाशक पदार्थ, (४) मिष्टकारक पदार्थ ।

प्रश्न-९ कुछ सुगन्धिकारक पदार्थों के नाम बताओ ?

उत्तर : जिनसे वायुमण्डल में सुगन्ध फैलती है और दुर्गन्ध का नाश होता है वे पदार्थ हैं कस्तुरी, केशर, अगर, तगर, कपूर कचरी, नागरमोथा, देवदारु, खस, चन्दन, धूप, गुगल, जायफल तथा सुखे हुए सुगंधित फूलों की पत्तियां आदि ।

प्रश्न-१० कुछ पुष्टिकारक पदार्थों के नाम बताओ ?

उत्तर : घी, पका हुआ अन्न, दूध, चावल, अश्वगंधा, सुखे मेवे जैसे-काजू, बादाम, खारक, छुहारा, अन्जीर, किसमिस, मुनक्का आदि ।

प्रश्न-११ ये महंगे महंगे पदार्थ-घी, काजू, बादाम आदि तो आजकल खाने को भी नहीं मिलते तो क्या इन्हें अग्नि में डालकर नष्ट करना बुद्धिमत्ता है ?

उत्तर : हां । बुद्धिमत्ता है, क्योंकि यज्ञ में डाला गया कोई

पदार्थ नष्ट नहीं होता है।

प्रश्न-१२ तो क्या होता है ?

उत्तर : वह रूपान्तरित होकर-सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में फैल जाता है व प्राणी मात्र को पुष्ट करता है।

प्रश्न-१३ इसमें क्या प्रमाण है ? उदाहरण देकर समझाओ।

उत्तर : इसमें विज्ञान का प्रमाण है, विज्ञान कहता है-संसार में कोई पदार्थ, नष्ट नहीं होता है वह केवल रूपांतरित होता है, उदाहरण-जैसे मिर्ची को अग्नि में डालते हैं तो वह नष्ट नहीं होती अपितु सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में फैल जाती है व आसपास उपस्थित सभी लोगों को खांसी उत्पन्न कराती है इसी प्रकार यज्ञ में डाले गये घी आदि पदार्थ वायुमण्डल में सूक्ष्म होकर फैलकर प्राणी मात्र को पुष्ट करते हैं।

प्रश्न-१४ कुछ रोग नाशक पदार्थों के नाम बताओ।

उत्तर : तुलसी, गिलोय, मुलहटी, यष्टीमधु, नागकेसर आदि।

प्रश्न-१५ कुछ मिष्ट पदार्थों के नाम बताओ।

उत्तर : गुड, शहद, मोहन भोग, खीर, लड्डू आदि।

प्रश्न-१६ यज्ञ के मुख्यतः कितने अर्थ होते हैं ?

उत्तर : तीन प्रकार के अर्थ होते हैं।

प्रश्न-१७ वे अर्थ कौन-कौन से हैं ?

उत्तर : (१) देवपूजा, (२) संगतिकरण, (३) दान

प्रश्न-१८ देवपूजा से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : इसमें जड़ व चेतन दोनों प्रकार के देवों की पूजा होती है, जैसे-यज्ञ से जल, वायु, पृथ्वी, आदि जड़ देवता शुद्ध होते हैं तो ये उनकी पूजा है साथ ही यज्ञ के बाद माता-पिता, गुरू आदि बड़ों को नमस्ते-प्रणाम, किया जाता है उनका सम्मान किया जाता है तो यह चेतन देवों की पूजा है ।

प्रश्न-१९ संगतिकरण से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : संगतिकरण से तात्पर्य मिल जुलकर संगठित हो जाना । जैसे यज्ञ में घी, और हवन आदि सामग्री के सभी पदार्थ मिल जुलकर संगठित हो जाते हैं व वायुमंडल को शुद्ध करते हैं । ऐसे ही यज्ञ वेदी में पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, बन्धु-बान्धव सब मिलकर यज्ञ करते हैं, संगठित होते हैं तथा आपस में एक दूसरे का सहयोग करने की भावना को बढाते हैं यह संगतिकरण का अर्थ हुआ ।

प्रश्न-२० यज्ञ के समय यजमान क्या दान करता है व क्या बन जाता है ?

उत्तर : यज्ञ के समय यजमान घी और सामग्री का दान करता है व देवता बन जाता है । क्योंकि जो देता है वह देवता होता है, इस अर्थ में चूंकि यजमान घी और सामग्री की आहूति देता है तो वह देवता बन

जाता है ।

प्रश्न-२१ यज्ञ की आत्मा क्या है ?

उत्तर : यज्ञ की आत्मा स्वाहा है ।

प्रश्न-२२ स्वाहा का अर्थ क्या होता है ?

उत्तर : स्वाहा का अर्थ है (१) सु+आ+हा । अर्थात् **सु**=उत्तम वस्तुओं का **आ**=पूर्णरुप से **हा**=त्याग करना । स्वाहा का अर्थ है - (२) मीठा बोलना, मधुर बोलना, प्रिय और हितकर बोलना, कटु और कड़वा न बोलना । स्वाहा का अर्थ है (३) **स्वं प्रति आह-** अपने प्रति कहना । आत्मनिरीक्षण करना, आत्मचिंतन करना । मैं कौन हूँ , कहां से आया हूँ, कहाँ जाना है, इत्यादि शाश्वत प्रश्नों पर विचार करना है । इसका एक अर्थ - (४) आहुति देना भी है परन्तु केवल आहुति देना ही अर्थ नहीं, मैं जो कुछ कर रहा हूँ, सोच-समझकर ठीक-ठीक कर रहा हूँ, यह भी अर्थ है । ऐसे ही स्वाहा का एक अर्थ और भी है कि (५) अपनी ही वस्तु को अपनी कहना दूसरों की वस्तु को अपनी कहकर उसमें अधिकार नहीं जमाना ।

प्रश्न-२३ स्वाहा के साथ आहूति कब देना सर्वोत्तम है ?

उत्तर : स्वाहा के उच्चारण के अन्त में आहुति देना सर्वोत्तम है ।

प्रश्न-२४ यज्ञ का प्राण क्या है ?

उत्तर : यज्ञ का प्राण है **इदन्न मम** ।

प्रश्न-२५ इदन्न मम का क्या अर्थ है ?

उत्तर : **इदन्न मम** का अर्थ है - यह मेरा नहीं है ।

प्रश्न-२६ इदन्न मम शब्द क्या संदेश देता है ?

उत्तर : संसार के सारे पदार्थ, सब के सब ईश्वर के हैं अपना कुछ भी न समझें, अर्थात अपने को उन पदार्थों का प्रयोग कर्ता समझें व स्वामी न समझें, इससे जीवन सुखमय बनेगा ।

प्रश्न-२७ यज्ञ का सार क्या है ?

उत्तर : सुगन्धि यज्ञ का सार है ।

प्रश्न-२८ यज्ञ के सम्बन्ध में गीता में क्या कहा है ?

उत्तर : अन्नाद् भवन्ति भूतानि, पर्जन्यात् अन्न सम्भवः ।
यज्ञात् भवति पर्जन्यो, यज्ञ कर्म समुद्भवः ॥

प्रश्न-२९ इस श्लोक का क्या अर्थ है ?

उत्तर : अन्न से प्राणी जीवित रहते हैं, और अन्न, बादल से पानी गिरने पर सम्भव होता है तथा यज्ञ करने से बादल=पर्जन्य बनता है, इसलिए यज्ञ कर्म का अनुष्ठान करना चाहिए ।

प्रश्न-३० यज्ञ के सम्बन्ध में महाभारत में क्या कहा है ?

उत्तर : नास्ति यज्ञ समं दानं, नास्ति यज्ञ समं निधिः ।

प्रश्न-३१ इसका अर्थ क्या है ?

उत्तर : यज्ञ के समान कोई दान नहीं है और यज्ञ के समान कोई निधि नहीं है । क्योंकि मनुष्य अन्न जल के बिना कुछ दिन तक जीवित रह सकता है किन्तु शुद्ध(वायु) आक्सिजन के बिना कुछ मिनट भी नहीं। और यज्ञ से शुद्ध वायु का दान होता है इसलिए यज्ञ के समान कई दान नहीं है कहा है । साथ ही यज्ञ से उत्तम स्वास्थ्य, निरोगी काया, व दीर्घायु मिलती है जो सबसे बड़ी निधि है । इसलिए इसके समान कोई निधि नहीं है कहा है ।

प्रश्न :३२ क्या महाभारत में यज्ञ करना आवश्यक बतलाया है ?

उत्तर : हाँ । जैसे वहां कहा है - नाग्निं परित्यजेज्जातु न च वेदान् परित्यजेत् अर्थात् अग्निहोत्र का त्याग कभी न करे व वेदों का स्वाध्याय कभी नहीं छोडे ।

प्रश्न-३३ यज्ञ के सम्बन्ध में शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में क्या कहा है ?

उत्तर : स्वर्ग कामो यजेत ।

प्रश्न-३४ इसका अर्थ क्या है ?

उत्तर : स्वर्ग की कामना करने वाला यज्ञ करे । स्वर्ग अर्थात् सुख, शांति, स्वास्थ्य, दीर्घायु, विद्या बल, पुत्र, यश, धन, सम्पत्ति, कीर्ति को प्राप्त करना ।

प्रश्न-३५ हमारे शास्त्रों में यज्ञ को कैसा कर्म कहा गया है ?

उत्तर : **श्रेष्ठतम कर्म** कहा है इस का अर्थ है सबसे उत्तम कर्म ।

प्रश्न-३७ यज्ञ करने वाले मरणोपरान्त किस लोक में जाते हैं (जन्म लेते हैं) ?

उत्तर : यज्ञ करने वाले मरणोपरान्त स्वर्ग लोक = विशेष सुखदायी स्थान, घर-परिवार में जन्म लेते हैं ।

प्रश्न-३८ इसमें क्या प्रमाण है ?

उत्तर : इसमें अथर्ववेद का प्रमाण है जैसे वहां कहा-"**इजानाः स्वर्गं यन्ति लोकं**" यज्ञ करने वाले स्वर्ग में जाते हैं ।

प्रश्न-३९ वेद में यज्ञ की और कैसी महत्ता बतलायी है ?

उत्तर : जैसे नदी फेन को बहाकर ले जाती है वैसे यज्ञ की अग्नि में डाली गई आहूति रोगों को बहाकर ले जाती है ।

प्रश्न-४० इसका प्रमाण कौन से वेद में और किस मन्त्र में है ?

उत्तर : इसका प्रमाण अथर्ववेद में है - और मन्त्र है "इदं हविर्यातु धानात्, नदीफेनमिवाहत्" ।

प्रश्न-४१ क्या यज्ञ करने से रोग से भी छुटकारा मिलता है ?

उत्तर : हां अनेक रोगों से छुटकारा मिलता है ।

प्रश्न-४२ यज्ञ करने से कौन-कौन से रोगों से छुटकारा मिलता है ?

उत्तर : यज्ञ करने से राजयक्ष्मा (टीबी), मलेरिया, चेचक, हैजा, चिकनगुनिया, श्वासरोग आदि अनेक रोगों से छुटकारा मिलता है तथा लगभग सभी शारीरिक और मानसिक रोगों को दूर करने में यह सहायक होता है।

प्रश्न-४३ यज्ञ को सारे विश्व ब्रह्मांड की नाभि कहा गया है, क्या यह सत्य है ?

उत्तर : हाँ सत्य है।

प्रश्न-४४ इसमें क्या प्रमाण है ?

उत्तर : "अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः"। ये वेद का प्रमाण है।

प्रश्न-४५ यज्ञ कर्ता को ऐश्वर्य मिलता है क्या ये बात भी सही है ?

उत्तर : हां सही है।

प्रश्न-४६ ऐसा कहां लिखा है ?

उत्तर : ऐसा अथर्ववेद में लिखा है जैसे "सुन्वानं उत सिषासित सहस्त्रा" इसका अर्थ हुआ यज्ञकर्ता को सहस्त्रों हजारों प्रकार का ऐश्वर्य मिलता है।

प्रश्न-४७ यज्ञकर्ता कैसा घर प्राप्त करता है ?

उत्तर : यज्ञ कर्ता धन-धान्य से परिपूर्ण घर-परिवार को प्राप्त करता है।

प्रश्न-४८ इसका प्रमाण कहां मिलता है ?

उत्तर : इसका प्रमाण भी अथर्ववेद में मिलता है, जैसे कहा "वनोतिसुन्वन क्षयं परीनसः" इसका अर्थ है - यज्ञ करने वाला धन सम्पत्ति से भरे पूरे परिवार को प्राप्त करता है ।

प्रश्न-४९ वेद में यज्ञ को और किस नाम से जाना गया है ?

उत्तर : वेद में यज्ञ को मार्गदर्शक, शरणदाता, सुखशांति दाता आदि नामों से भी जाना गया है ।

प्रश्न-५० इसका कहां और क्या प्रमाण है ?

उत्तर : इसका अथर्ववेद में प्रमाण है - "अयं यज्ञो गातुविद् नाथविद् प्रजाविद्" ।

प्रश्न-५१ सामवेद में यज्ञ के महत्त्व के विषय में क्या कहा है ?

उत्तर : सामवेद में कहा है "शर्मभक्षीय दैव्यम्" अर्थात यज्ञकर्ता को दिव्यसुख मिलता है ।

प्रश्न-५२ ऋग्वेद में यज्ञ के सम्बन्ध में क्या कहा है ?

उत्तर : ऋग्वेद में कहा है - हम यज्ञ को छोड़कर नहीं चलें अर्थात् यज्ञ करना बन्द करके जीवनपथ में न बढ़े अपितु नित्यप्रति यज्ञ करते हुए जीवन पथ में अग्रसर होवें ।

प्रश्न-५३ इसका प्रमाण क्या है ?

उत्तर : इसका प्रमाण है 'मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः ।'

प्रश्न-५४ अथर्ववेद में यज्ञ के विषय में क्या कहा गया है ?

उत्तर : अथर्ववेद में यज्ञ के विषय में कहा है - हे अग्नि हम सब परिवार जन मिलकर तुझे प्रज्वलित कर यज्ञ किया करें ।

प्रश्न-५५ इसका प्रमाण क्या है ?

उत्तर : इसका प्रमाण है- "तं त्वा जातवेदः समिद्धं उपसदेम सर्वे" ।

प्रश्न-५६ क्या यजुर्वेद में भी यज्ञ के विषय में कुछ कहा गया है ?

उत्तर : हाँ । यजुर्वेद में कहा गया है - यज्ञ करने से आयु बढ़ती है, व्यक्ति समाज को अधिकाधिक परोपकार करने में समर्थ होता है, यज्ञ से मानसिक शक्ति भी बढ़ती है व वाक्शक्ति भी बढ़ती है तथा आत्मा भी बलवान बनता है ।

प्रश्न-५७ इसका प्रमाण क्या है ?

उत्तर : इसका प्रमाण है - आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतां आत्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतांस्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ।

यजु. १८-२९

प्रश्न-५८ यज्ञ करने से और क्या-क्या लाभ होता है विस्तार से बताओ ।

उत्तर : यज्ञ करने से और भी लाभ हैं जो इस प्रकार से हैं-

१. जल, वायु, भूमि, अन्न आदि की शुद्धि होती है ।

२. उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, तथा विशेष सुख शान्ति (स्वर्ग) की प्राप्ति होती है ।

३. अनेक रोगों से निवृत्ति मिलती है तथा मान सम्मान में भी वृद्धि होती है ।

४. प्रकृति का सन्तुलन बन रहता है अर्थात् ऋतुचक्र भी सही चलता रहता है ।

५. वातावरण में विद्यमान हानिकारक-रोगकारक कीटाणुओं का नाश होता है ।

६. सुनने में आता है कि घी की एक बूंद से पांच अरब परमाणु निकलते हैं जो वायु में विद्यमान रोगाणुओं का नाश करते हैं ।

७. यज्ञ के धुएँ से वायुमण्डल के ओजोन पर्त में बने छिद्र बंद हो जाते हैं जिससे कि पृथ्वी पर पराबैंगनी किरणें अंतरिक्ष से नहीं आ पाती हैं ।

८. व्यक्ति की धर्म के प्रति रुचि, प्रेम व विश्वास में वृद्धि होती है ।

९. जिस घर में दैनिक हवन होता है वहां कोई बच्चा

अल्पायु में किसी संक्रामक रोग से मृत्यु को प्राप्त नहीं होता है।

यज्ञ करने से विषैली गैसों का नाश होता है।

१०. यज्ञ करने से इस लोक व परलोक दोनों जगह सुख शांति व समृद्धि की प्राप्ति होती है।

११. एक तोला घी यज्ञ में डालने से १० क्विन्टल आक्सीजन बनता है जो मनुष्यों को प्राण दान करता है।

१२.

प्रश्न-५९ सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में यज्ञ के सम्बन्ध में क्या सन्देश दिया गया है ?

उत्तर : सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में तो यज्ञ के विषय में एक विस्तृत प्रश्नोत्तरी के माध्यम से यज्ञ के लाभ व न करने पर हानि की चर्चा की गयी है।

प्रश्न-६० **सत्यार्थ प्रकाश की प्रश्नोत्तरी कौन से समुल्लास में है ?**

उत्तर : सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में यह प्रश्नोत्तरी है। इसकी प्रश्नोत्तरी शैली नीचे दी जा रही है।

प्रश्न-६१ **होम करने से क्या उपकार होता है ?**

उत्तर : होम करने से जलवायु शुद्ध और प्राणियों को आरोग्य प्राप्त होता है।

प्रश्न-६२ **क्या यज्ञ करने से घृतादि पदार्थों का नाश होता है ?**

उत्तर : नहीं। यह में घी आदि सुगन्धित द्रव्य डालने से उसका विनाश नहीं होता अपितु सुक्ष्मातिसुक्ष्म परमाणुओं में परिवर्तित होकर यह कई गुना बढ़कर हमें फिर से मिल जाता है। जब हम घी को यज्ञ में डालते हैं, तो उसे हवा ले लेती है और बादल तक पहुंचा देती है बादल उसको पानी बनाकर धरती में वर्षा करती है, धरती उसे अपने पास नहीं रखती, उसे बहुत प्रकार के फसल-वृक्ष वनस्पतियों मनुष्य व पशु-पक्षी आदि को पहुंचा देती है जिससे मनुष्य, गाय आदि प्राणी उसे भोजन के रूप में प्राप्त कर तृप्त होते हैं। गाय घास खाकर दूध देती है, दूध से फिर घी बनता है घी से फिर यज्ञ का चक्र चलता है।

प्रश्न-६३ यदि सुगन्धित तथा पुष्टि कारक पदार्थ खाए या खिलाए जाएँ तो लाभ न होगा ?

उत्तर : सुगन्धित तथा पुष्टिकारक पदार्थ खाने या किसी व्यक्ति विशेष को खिलाने से तो उसका लाभ एक ही व्यक्ति को होगा, परन्तु-अग्नि में उन पदार्थों की आहुति देने से लाखों मनुष्यों को लाभ पहुँचेगा। इसलिए खाने-खिलाने की अपेक्षा अग्नि में होम करना ही लाभकारी और आवश्यक है। उदाहरण के लिए मिर्च यदि एक व्यक्ति खावे तो उसको ही मिर्ची लगेगी और यदि वही मिर्च को अग्नि को अर्पित कर

दे तो उपस्थित सभी जनों को मिर्च लगने लगेगी, अर्थात् अग्नि किसी पदार्थ की शक्ति को घटाता नहीं अपितु बड़ा कर हवा के माध्यम से चारों फैला देता है ।

प्रश्न-६४ मन्त्रों को बोलकर होम करने का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर : मन्त्रों में वह शिक्षा है जिससे होम के लाभ का ज्ञान होता है इस मन्त्र पाठ के निमित्त से वेद की भी सुरक्षा होती है ।

प्रश्न-६५ क्या होम न करने से कुछ पाप होता है ?

उत्तर : मनुष्य के शरीर से नित्य की दुर्गन्ध निकलता है जिससे जलवायु भी बिगड़ता है और प्राणियों को दुःख भी मिलता है इसका पाप मनुष्य को होता है। अतः इस पाप के निवारणार्थ सुगन्धित पदार्थों की आहुति होम में डालकर जलवायु को शुद्ध कर अपना तथा अन्य प्राणियों का कल्याण करना चाहिए ।

प्रश्न-६६ यज्ञ करने से वास्तव में लाभ होता है विषैली गैसों का नाश होता है इसका आधुनिक काल में कोई उदाहरण बताओ ।

उत्तर : हां । यज्ञ करने से वायुमण्डल की शुद्धि होती है, यज्ञ से वर्षा ठीक प्रकार से होती है, व फल-फूल इत्यादि अच्छे मात्रा में हमें उपलब्ध होते हैं । यज्ञ से निरोगता

की प्राप्ति व आयु की वृद्धि होती है, यज्ञ के माध्यम से अनेक रोगों की चिकित्सा होती है।

इसमें एक उदाहरण – मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में स्थित यूनियन कार्बाईड कारखाने से गैस रिसने की महत्त्वपूर्ण घटना प्रस्तुत की जा रही है –

०२ दिसम्बर १९८४ की मध्य रात्रि में अपनी पत्नी त्रिवेणी (३६ वर्षीया) को उल्टी करते सुन श्री एस. एल. कुशवाहा (४५ वर्षीया) की नींद रात्रि में डेढ़ बजे खुल गई। शीघ्र ही वे स्वयं और उनके बच्चे भी खांसने लगे, उनकी आंखों में जलन होने लगी तथा सभी का दम घुटने लगा घर से बाहर निकले तो देखा कि पूरे मुहल्ले में हाय तौबा मची है। तभी किसी ने श्री कुशवाहा को लगभग एक मील दूर स्थित यूनियन कार्बाइड फैक्टरी से गैस रिसने की बात बताई।

वे सभी भीड़ के साथ भागने की सोच रहे थे कि त्रिवेणी ने कहा हम सब हवन क्यों न करें ? उस पूरे परिवार ने यज्ञ किया और २० मिनट के अन्दर (एम.आई.सी.) गैस का दुष्प्रभाव समाप्त हो गया तथा पूरा परिवार सकुशल रहा।

प्रश्न-६७ प्राचीन काल में यज्ञ होता था, इसका कुछ उदाहरण बताओ।

उत्तर : प्राचीनकाल में सभी ऋषि महर्षि यज्ञ करते थे, रामायण काल में तो मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी, ऋषि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करने के लिए भाई लक्ष्मण के साथ लेकर गये थे व ताड़का आदि अनेकों राक्षसों का वध किया था।

प्रश्न-६८ क्या रामचंद्र स्वयं यज्ञ करते थे ?

उत्तर : हाँ, रामचंद्र जी सपरिवार दैनिक यज्ञ प्रातःसायं किया करते थे।

प्रश्न-६९ योगीराज कृष्ण भी यज्ञ करते थे ?

उत्तर : हां योगीराज कृष्ण भी नित्यप्रति दैनिक यज्ञ करते थे।

प्रश्न-७० क्या इन यज्ञों के अतिरिक्त भी कुछ यज्ञों के नाम बताओ।

उत्तर : अमावस्या को यज्ञ, पूर्णमासी का यज्ञ, नवसंवत्सरेष्टि यज्ञ, आदि वृष्टि यज्ञ।

प्रश्न-७१ प्राचीनकाल एवं रामायण व महाभारत काल की कुछ प्रसिद्ध यज्ञों के नाम बताओ ?

उत्तर : प्राचीन काल में सतयुग के समय महाराजा हरिश्चन्द्र ने सर्वमेध यज्ञ किया था। जिसमें उन्होनें अपना सब कुछ दान दिया था। इसी प्रकार महाप्रतापी महाराजा रघु ने भी सर्वमेध यज्ञ किया था। इसमें उन्होनें अपना सब कुछ दान दे दिया था। ऐसे ही राजा

दशरथ द्वारा पुत्र की प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ किया गया था एवं उनके पुत्र राजा रामचन्द्र द्वारा अश्वमेधयज्ञ किया गया था और महाराजा युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ भी किया गया था ।

प्रश्न-७२ यज्ञ में प्रयुक्त होनेवाली लकड़ी को क्या कहते हैं?

उत्तर : यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली लकड़ी को समिधा कहते हैं ।

प्रश्न-७३ यह समिधा कितने प्रकार की होती है ? या कौन-कौन से वृक्ष की होती है ?

उत्तर : यज्ञ में प्रयुक्त होनेवाली समिधा अनेक प्रकार की होती है जैसे-बिल्व, शमी, चन्दन, पलास, पीपल, बड़, गूलर, आम, खैर आदि वृक्षों की ।

प्रश्न-७४ इन्हीं वृक्षों की ही समिधा यज्ञ में क्यों प्रयुक्त होती है ?

उत्तर : क्योंकि इनके जलने पर कार्बनडाई आक्साइड कम बनता है व धुआं भी कम होता है तथा आंखों में जलन भी नहीं होती ।

प्रश्न-७४ कैसी-कैसी समिधा का प्रयोग नहीं करना चाहिए कुछ उदाहरण बताओ ।

उत्तर : बबूल की समिधा या जिनके जलने पर धुंआ अधिक

होता है आंखों में जलन भी तेज होता है, या जिन समिधाओं में किसी प्रकार के कीड़े मकोड़े या सड़ी गली हों उनका प्रयोग न करें और जो अपवित्र और दूषित हों उनका भी त्याग करें ।

प्रश्न-७६ यज्ञ कुण्ड किन धातुओं के होते हैं उनमें उत्तम उत्तम कौन से हैं ?

उत्तर : यज्ञ कुंड लोहा, पीतल, ताम्बा आदि के होते हैं कीन्तु इनसे सोने चांदी के हवन कुण्ड अत्यन्त लाभकारी गुणकारी और सर्वोत्तम है ।

प्रश्न-७७ यज्ञ के पात्र किनके द्वारा निर्मित होने चाहिए ।

उत्तर : यज्ञ के पात्र भी सोने, चांदी, ताम्बा, पीतल, लकड़ी आदि के होने चाहिए यद्यपि आजकल स्टील के पात्र अधिक प्रचलित हैं ।

प्रश्न-७८ यज्ञ में घृताहुति देने के लिए प्रयुक्त होनेवाले चम्मच को क्या कहते हैं ?

उत्तर : यज्ञ में घृताहुति देने के लिए प्रयुक्त होनेवाले चम्मच को श्रुवा कहते हैं ।

प्रश्न-७९ यह श्रुवा कैसे पकड़नी चाहिए ?

उत्तर : मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ से श्रुवा को पकड़ना चाहिए ।

प्रश्न-८० यज्ञ कुण्ड का आकार कैसा होना चाहिए ।

उत्तर : यज्ञ कुण्ड किसी धातु अथवा मिट्टी का हो, उपर १२ वा १६ अंगुल चौकोर, उतनी ही गहरी और नीचे ३ या ४ अंगुल परिमाण से वेदी इस प्रकार से बनाये अर्थात् उपर जितनी चौड़ी हो उसकी चतुर्थांश नीचे चौड़ी रहे ।

प्रश्न-८१ यज्ञ कुण्ड की कितनी मेखलाऐं होती हैं ?

उत्तर : यज्ञ कुंड की तीन मेखलाऐं होती हैं ।

प्रश्न-८२ मेखलाओं का तीन लोकों और पांच महाभूतों से क्या सम्बन्ध है, एवं परिमाण लिखो ।

उत्तर : यज्ञकुण्ड में तीन मेखलाऐं होती हैं । लोक भी तीन हैं इसलिए मेखला भी तीन हैं । जब इन मेखलाओं का निर्माण होता है तब ये पांच अंगुल चौड़ी और पांच अंगुल उँची होती हैं । आकाश आदि भूत पांच ही हैं इसलिए मेखलाऐं भी पांच-पांच अंगुल की हैं ।

प्रश्न-८३ प्रथम यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली तीन समिधाओं का परिमाण क्या हैं ?

उत्तर : तीनों समिधाओं का परिमाण यह है कि वह आठ-आठ अंगुल की लम्बी तथा अंगुष्ठ के सदृश चौड़ी होनी चाहिए ।

प्रश्न-८४ यज्ञ दिन में कितने बार करना चाहिए ।

उत्तर : यज्ञ मुख्यतः दिन में दो बार करना चाहिए ।

प्रश्न-८५ यज्ञ के लिए सर्वोत्तम समय क्या है ?

उत्तर : प्रातः सूर्योदय पश्चात, सायं सूर्यास्त से पहले ।

प्रश्न-८६ यदि इन दोनों समय में यज्ञ नहीं कर पाते तो अन्य समय कर सकते हैं या नहीं ?

उत्तर : अन्य समय पर भी कर सकते हैं ।

प्रश्न-८७ यदि दो समय यज्ञ न कर सकें तो ?

उत्तर : किसी एक समय भी यज्ञ करके दोनों कालों की आहूति प्रदान कर देनी चाहिए ।

प्रश्न-८७ यदि दो समय यज्ञ न कर सकें तो ?

उत्तर : किसी एक समय भी यज्ञ करके दोनों कालों की आहूति प्रदान कर देनी चाहिए ।

प्रश्न-८८ यज्ञ नहाकर ही करना चाहिए या बिना नहाये भी कर सकते हैं ?

उत्तर : वैसे नहाकर ही यज्ञ करना चाहिए किन्तु आपत्तिकाल में जैसे रूग्णावस्था में, ज्वर की अवस्था में हाथ पैर धोकर शुद्ध वस्त्र पहनकर यज्ञ कर सकते हैं, इसमें मन की शुद्धता अनिवार्य है ।

प्रश्न-८९ बिना भोजन किए यज्ञ करना चाहिए या कुछ खा कर भी यज्ञ कर सकते हैं ?

उत्तर : नियम तो यह है कि बिना कुछ खाये ही यज्ञ करना चाहिए किंतु कभी आपतकाल में जैसे यात्रा से आये

हुए हों व भोजन कर चुके हों या कोई विशेष रोग हो कि जिसमें खाली पेट न रह सकें तो कुछ फल दूध आदि ग्रहण करके भी यज्ञ कर सकते हैं।

प्रश्न-१० **परिवार में सभी लोग मिलकर या पति-पत्नी मिलकर ही यज्ञ करें या अकेले भी कर सकते हैं ?**

उत्तर : पति-पत्नी आदि सभी लोग मिलकर यज्ञ करें तो उत्तम हैं किन्तु यदि सब एकत्र नहीं हो पा रहे हों, पति-पत्नी में कोई बाहर गया हुआ हो तो अकेले यज्ञ कर सकते हैं।

प्रश्न-११ **यज्ञ करनेवाले मंत्रों से ही यज्ञ करें, यदि मंत्र नहीं आते हों तो क्या यज्ञ नहीं करना चाहिए।**

उत्तर : यज्ञ के मंत्रों से हवन करना सर्वोत्तम किंतु यदि यज्ञ के मंत्र नहीं आते तो गायत्री मंत्र से भी हवन कर सकते हैं।

प्रश्न-१२ **यज्ञ के लिए गाय का घी चाहिए या अन्य घी से भी कर सकते हैं ?**

उत्तर : यज्ञ हेतु गाय का घी ही सर्वोत्तम होता जरूरी है किंतु वह उपलब्ध न हो पाये तो फिर भैंस के घी से कर सकते हैं, अन्य डालडा आदि से नहीं करना चाहिए।

प्रश्न-१३ **गाय के घी से ही यज्ञ करना क्यों सर्वोत्तम है ?**

उत्तर : गाय के घी में स्वर्ण का अंश होता है, जबकि भैंस

के घी में ऐसा स्वर्ण तत्त्व नहीं होता है, ये समझ लें गाय का घी सोना है तो भैंस का घी चांदी। गोघृत से कोलेस्ट्रोल नहीं बढता है जबकि भैंस के घी से कोलस्ट्रोल बढ जाता है। गाय का घी नेत्र ज्योति वर्धक है व अनेक रोगों में लाभकारी है जबिक भैंस का घी इतना गुणकारी नहीं है।

प्रश्न-९४ क्या यज्ञ करने के लिए यज्ञोपवीत पहनना अनिवार्य है।

उत्तर : यज्ञोपवीत पहन कर यज्ञ करने का विधान है किन्तु कभी यज्ञोपवीत उपलब्ध नहीं हो पा रहा है तो इसके अभाव में यज्ञ बन्द नहीं करना चाहिए।

प्रश्न-९५ यज्ञ कौन कर सकता है ?

उत्तर : ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय ये तीन वर्ण यज्ञ कर सकते हैं ?

प्रश्न-९६ क्या अकेले स्त्री को भी यज्ञ करने का अधिकार है ? इसके प्रमाण दो।

उत्तर : हां अकेले स्त्री भी यज्ञ कर सकती है। वेद में कहा गया है - स्त्री ही ब्रह्मा बभूविथ। प्राचीन काल में गार्गी, मैत्रेयी, माता कौशल्या महारानी मदालसा सीता माता आदि अनेक विदुषी नारियां हुई जो यज्ञ करती थीं और यज्ञ की ब्रह्मा भी बनती थीं।

प्रश्न-९७ यज्ञ की हवन सामग्री उपलब्ध न हो तो क्या करें ?

उत्तर : घर में भी चावल, जौ, तिल, गुड, धूप, गूगल, उडद, शक्कर आदि पदार्थ मिलाकर हवन सामग्री बनाकर यज्ञ कर सकते हैं ।

प्रश्न-९८ वृष्टि नहीं हो रही तो यज्ञ करने से क्या वृष्टि होती है, क्या ये बात सही है ?

उत्तर : हां सही है । जिन-जिन पदार्थ से वृष्टि होती है उन सभी पदार्थों को मिलाकर विधिवत हवन सामग्री बनाकर शास्त्रों की रीति से यज्ञ किया जाये तो वृष्टि होती है ।

प्रश्न-९९ यज्ञ की अग्नि से क्या प्रेरणा मिलती है ?

उत्तर : हम अग्नि की भांति सदा उपर उठें, उन्नति करें, कभी पतन को प्राप्त न हों । अग्निसमान प्रकाश फैलायें अर्थात् ज्ञान के प्रकाश से अंधकार का नाश करें, तथा जैसे अग्नि ठण्डी को दूर करती है वैसे हम दूसरों के दुःखों को दूर करनेवाले बनें ।

प्रश्न-१०० ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी और संन्यासी इन चारों में से किसे यज्ञ करना अनिवार्य है ?

उत्तर : संन्यासी को छोड़कर सभी को यज्ञ करना अनिवार्य है ?

प्रश्न-१०१ संन्यासी को छूट क्यों दी गयी है ?

उत्तर : क्योंकि संन्यासी का जीवन ही यज्ञमय बन जाता है उसके सभी कार्य परोपकार के लिए होते हैं,

उसका अपना कोई सांसारिक कार्य नहीं होता है वह निष्काम कर्म में आरूढ होता है ।

प्रश्न-१०२ तो गृहस्थी, वानप्रस्थी को छूट क्यों नहीं ?

उत्तर : क्योंकि उनका जीवन यज्ञमय नहीं बन पाया होता है उनका सांसारिक स्वार्थ अभी शेष रहता है व वे सकाम कर्म से भी युक्त रहते हैं ।

प्रश्न-१०३ क्या केवल यज्ञ ही करते रहने से व ईश्वर का ध्यान उपासना समाधि बिना भी मोक्ष हो जाता है ?

उत्तर : नहीं हो सकता ।

प्रश्न-१०४ तो फिर यज्ञ क्यों करें जब इससे मोक्ष नहीं हो सके ?

उत्तर : यज्ञ करने से व्यक्ति धार्मिक बनता है, व यज्ञ करते-करते ईश्वर का ध्यान उपासना करे तो मोक्ष की ओर अग्रसर हो सकता है, ऋषि ऋण से मुक्त होता है ।

प्रश्न-१०५ क्या यज्ञ करना धर्म है ?

उत्तर : हां, यज्ञ को धर्म के तीन स्तम्भ में से एक स्तम्भ माना गया है ।

प्रश्न-१०६ धर्म के तीन स्तम्भ कौन-कौन से हैं ?

उत्तर : (१) यज्ञ करना, दान देना, स्वाध्याय करना (२) गुरुकुल में वास करते हुए विद्या अध्ययन करना,

(३) तप करना अर्थात् मान - अपमान, सर्दी-गर्मी, लाभ-हानि, सबको सहन करते हुए वेद पथ पर चलते हुए ईश्वर की ओर बढ़ते रहना।

प्रश्न-१०७ **पंच महायज्ञ किसे कहते हैं ?**

उत्तर : (१) ब्रह्मयज्ञ, (२) देवयज्ञ (३) पितृयज्ञ, (४) अतिथियज्ञ, (५) बलिवैश्यदेवयज्ञ इनको पंचमहायज्ञ कहते हैं।

प्रश्न-१०८ **बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं द्वारा कराये गये यज्ञों को तो महायज्ञ नहीं कहा इनको क्यूं कहा ?**

उत्तर : क्योंकि ये नित्य करने के यज्ञ हैं और इसके माध्यम से समस्त संसार का कल्याण होने के साथ-साथ में अपने आत्मा का भी कल्याण होता है, तथा गृहस्थ जीवन (मानव जीवन) सफल बनता है और जो व्यक्ति इन पांच महायज्ञों को नित्यप्रति करने के साथ-साथ में अपने आत्मा का भी कल्याण होता है, तथा गृहस्थ जीवन (मानव जीवन) सफल बनता है और जो व्यक्ति इन पांच महायज्ञों को नित्यप्रति करने के साथ-साथ रोज स्वाध्याय-सत्संग भी करता है तथा सब प्रकार के पापकर्म से दूर रहता है उसको अगले जन्म में मानव चोला जरूर मिलता है इसलिए इसे महायज्ञ कहते हैं।